राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय
दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र (CDOE)
हिन्दी विभाग

End Semester Examination, Session 2025 - 2026 (I Semester)

Programme	: M. A. (HINDI)	Semester	: I
Course Code	: **6.0 ODLMAH01**	Maximum Marks	: 70
Course Title	: हिंदी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल)	Time Allowed	: 3 Hrs
Course Credit	: **04**	Total Printes Pages	: 1 Page

सूचना : सभी प्रश्न अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न में आंतरिक विकल्प है। प्रत्येक प्रश्न को 10 अंक है।

प्र. 1. आदिकाल के नामकरण एवं आदिकाल की प्रमुख परस्थितियों का परिचय दीजिए ? 10

अथवा

आदिकाल के प्रमुख साहित्यिक आन्दोलनों (रासो, जैन, सिद्ध, बौद्ध एवं नाथ) का परिचय दीजिए ? 10

प्र. 2. भक्ति के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए भक्तिकाल के उदय के सामाजिक-आर्थिक कारणों मीमांसा कीजिए ? 10

अथवा

भक्तिकाल की मुख्य प्रवृत्तियों को स्पष्ट करते हुए वैष्णव भक्ति का उदय एवं अलवर संत परंपरा का अवलोकन कीजिए ? 10

प्र. 3. ज्ञानमार्गी शाखा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ लिखकर संत काव्य के मुख्य कवियों का परिचय दीजिए ? 10

अथवा

प्रेममार्गी शाखा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ लिखकर सूफी साहित्य के मुख्य कवियों का परिचय दीजिए ? 10

प्र. 4. राम काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों लिखकर संत तुलसीदास के साहित्य अवलोकन कीजिए ? 10

अथवा

कृष्ण काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों लिखकर सूरदास के काव्य पर प्रकाश डालिए ? 10

प्र. 5. रीतिकालीन साहित्य की प्रमुख परस्थितियों पर विस्तार से प्रकाश डालिए ? 10

अथवा

रीतिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचयात्मक अध्ययन कीजिए ? 10

प्र. 6. रीतिबद्ध काव्य धारा एवं रीतिसिद्ध काव्यधारा से तात्पर्य एवं उनके मुख्य कवियों का परिचय दीजिए ? 10

अथवा

रीतिमुक्त काव्यधारा को स्पष्ट करते हुए घनानंद एवं अन्य कवियों का अध्ययन कीजिए ? 10

प्र. 7. आदिकाल की युगीन प्रवृत्तियों का परिचय देकर आदिकाल के प्रमुख कवियों का अध्ययन कीजिए ? 10

अथवा

'भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का सुवर्णयुग माना जाता है' इस उक्ति को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ? 10

CENTRAL UNIVERSITY OF RAJASTHAN

CENTRE FOR DISTANCE & ONLINE EDUCATION

Department of Hindi.

End Semester Examination, Session 2026-27

Programme : M.A.
Course Code: 6.0 ODL MAH 02
Course Title : हिंदी भाषा का स्वरुप एवं इतिहास
Course Credit : 4

Semester : I
Maximum Marks : 70
Time Allowed : 3 Hrs
Total Printed Pages : 2

Instructions to Candidates: (If required)

1. निम्न सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य है |

Q.No.			Marks
1.		भाषा एवं बोली का सम्बन्ध उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिये		[10]
		OR	
		भारोपीय भाषा परिवार की प्रमुख शाखाओं का उदाहरण सहित वर्गीकरण कीजिये		[10]
2.		रामभक्ति काव्यधारा में अवधी का विकास उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिये		[10]
		OR	
		अर्थ परिवर्तन की दिशाएं उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिये		[10]
3.		रीतिकालीन काव्य में ब्रजभाषा का विकास उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिये		[10]
		OR	
		मानव मुख से निकालने वाली ध्वनियों के उच्चारण, उनके गुणों और वर्गीकरण उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिये		[10]
4.		पिजिन और क्रियोल उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिये		[10]
		OR	
		प्राकृत भाषा पर उदाहरण सहित टिप्पणी लिखिए		[10]

5.		दक्खिनी हिन्दी पर संक्षिप्त टिप्पणी उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिये।	[10]
		OR	
		19वीं सदी में खड़ी बोली के तीव्र विकास के कारण उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिये।	[10]
6.		हिंदी की उपभाषाएं व बोलियाँ स्पष्ट कीजिये।	[10]
		OR	
		'राजभाषा' हिंदी की संवैधानिक स्थिति स्पष्ट कीजिये।	[10]
7.		अपभ्रंश भाषा पर उदाहरण सहित टिप्पणी लिखिए।	[10]
		OR	
		हिंदी भाषा के प्रसार में प्रमुख आन्दोलन तथा प्रमुख संस्थानों का योगदान स्पष्ट कीजिये।	

राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र

सत्रांत परीक्षा-मई -जून 2026 (प्रथम सत्रांश)

पाठ्यक्रम : **स्नातकोत्तर हिंदी**	सत्रांश	:	**1**
कोर्स कोड : **(6.0 ODLMAH03)**	अधिकतम अंक	:	70
प्रश्नपत्र शीर्षक : **प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य**	समय सीमा	:	**3 घंटा**
कोर्स क्रेडिट : 04	कुल पृष्ठ	:	**04**

सामान्य निर्देश :- (1) सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं।

(2) प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है |

Q.No.			Marks
1.		'बीसलदेव रासो एक श्रृंगार-प्रधान और गेय काव्य है', पठित पाठ की विशेषताओं के आधार पर स्पष्ट कीजिये ?	[10]
		अथवा	
		विद्यापति का जीवन परिचय देते हुए निम्न पद की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए:- "सामर बरन, नयन अनुरंजित, जलद-जोग फुल कोका। कट-कट बिकट ओठ-पुट पाँड़रि लिधुर-फेन उठ फोका॥ घन-घन-घनन धुधुर कत बाजए, हन-हन कर तुअ काता। विद्यापति कवि तुअ पद सेवक, पुत्र बिसरु जनि माता॥"	[10]
2.		जायसी के विरह वर्णन विशेषकर नागमती के वियोग खंड की मार्मिकता का विस्तार से वर्णन करें?	[10]
		अथवा	
		निम्न पद की संप्रग व्याख्या कीजिए:-	[10]

		"चढा आसाढ गगन घन गाजा। साजा विरह दुंद दल बाजा।। घूम, घाम, घौरे घन धाए। सेत धजा बग पाँति देखाए।। खड्क बीजु चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरसहिं घन घोरा।। ओनई घटा आइ चहुँ फेरी। कंत! उबारु मदन हौं घेरी।। दादुर मोर कोकिला पीऊ। गिरै बीजु, घट रहै न जीऊ।। पुष्य नखत सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाह, मदिर को छावा।। अद्रा लागि लाग भुईं लेई। माहि बिनु पिउ को आदर देई?।। जिन्ह घर कंता ते सुखी, तिन्ह गारौं औ गर्व। कंत पियारा बाहिरै हम सुख भूला सर्व।।"	
3.		निम्न पद की संप्रग व्याख्या कीजिए:- "विलग जनि मानहु, ऊधौ प्यारे ! वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहिं ते कारे। तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे। तिनके संग अधिक छवि उपजत कमलनैन मनिआरे ।। मानहु नील माट तें काढ़े लै जमुना ज्यों पखारे। ता गुन स्याम भई कालिंदी सूर स्याम-गुन न्यारे ।।"	[10]
		अथवा	
		" गोकुल सबै गोपाल उपासी। जोग-अंग साधत जे ऊधो ते सब बसत ईसपुर कासी।। यद्यपि हरि हम तजि अनाथ करि तदपि रहति चरननि रसरासी। अपनी सीतलताहि न छाँडत यद्यपि है ससि राहु-गरासी।। का अपराध जोग लिखि पठवत प्रेम भजन तजि करत उदासी। सूरदास ऐसी को बिरहिन माँगति मुक्ति तले गुनरासी।। "	[10]
4.		"सूरदास अपनी बंद आँखों से वात्सल्य का कोना-कोना झाँक आए हैं" उक्त कथन के आधार पर सूरदास की प्रमुख काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ?	[10]
		अथवा	

		"तुलसी का सम्पूर्ण काव्य में लोक-मंगल की भावना एवं समन्वय की विराट चेष्टा है" उक्त कथन की सार्थकता उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए?	[10]
5.		निम्न पद की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए:- (क) " ऐसो को उदार जग माहीं। बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं।। जो गति जोग बिराग जतन करि नहिं पावत मुनि ग्यानी। सो गीत देत गीध सबरी कहँ प्रभु न बहुत जिय जानी।। जो संपति दस सीस अरस करि रावन सिव पहँ लीन्हीं। लो संपदा बिभीषन कहँ अति सकुच-सहित हरि दीन्हीं।। तुलसिदास सब भाँति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो। तौ भजु राम, काम सब पूरन करैं कृपिनिधि तेरो।। "	[10]
		अथवा	
		" केसव! कहि न जाइ का कहिये। देखत तव रचना बिचित्र हरि! समुझि मनहिं मन रहिये।। सून्य भीति पर चित्र, रंग नहिं, तनु बिनु लिखा चितेरे। धोये मिटइ न मरइ भीति, दुख पाइय एहि तनु हेरे।। रबिकर-नीर बसै अति दारुन मकर रूप तेहि माहीं। बदन-हीन सो ग्रसै चराचर, पान करन जे जाहीं।। कोउ कह सत्य, झूठ कह कोऊ, जुगल प्रबल कोउ मानै। तुलसिदास परिहरै तीन भ्रम, सो आपन पहिचानै।। "	[10]
6.		मीराबाई का संक्षिप्त जीवन-परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए?	[10]
		अथवा	

		"वर्तमान समय में भी रहीम के दोहे प्रासंगिक हैं।" इस कथन को स्पष्ट करते हुए निम्न दोहा की व्याख्या कीजिए:- (क) "आप न काहू काम के, डार पात फल फूल। औरन को रोकत फिरै, रहिमन पेड़ बबूल।। " (ख) "अमर बेलि बिनु मूल की, प्रतिपालत है ताहि। रहिमन ऐसे प्रभुहिं तजि, खोजत फिरिए काहि।।"	[10]
7.		बिहारी के दोहों में प्रयुक्त 'गागर में सागर' की उक्ति की विवेचना निम्न दोहे के आधार पर कीजिए :- "सालति है नटसाल सी, क्यौं हूँ निकसित नाँहि। मनमथ-नेजा-नोक सी खुभी खुभी जिय माँहि।।"	[10]
		अथवा	
		"घनानंद के काव्य में प्रेम और सौंदर्य का अद्भुत समन्वय है।"—इस कथन के आलोक में घनानंद के काव्य-सौंदर्य की सोदाहरण समीक्षा कीजिए ?	[10]

CENTRAL UNIVERSITY OF RAJASTHAN
CENTRE FOR DISTANCE & ONLINE EDUCATION
Department of Hindi

End Semester Examinations, Session 2025-26 (I Semester)

Programme: M.A. Hindi		Semester	: I
Course Code: 6.0 ODLMAH04		Maximum Marks	: 70
Course Title: हिंदी आलोचना		Time Allowed	: 3 Hrs
Course Credit: 4		Total Printed Pages	: 2

Instructions to Candidates: (If required)

Q.No.			Marks
1.		आलोचना को परिभाषित करते हुए उसके उद्देश्य एवं महत्त्व को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।	[10]
		OR	
		"सच्चा आलोचक रचनाकार और पाठक के बीच सेतु का कार्य करता है।" इस कथन के आलोक में एक अच्छे आलोचक के प्रमुख गुणों का वर्णन कीजिए।	[10]
2.		हिंदी आलोचना के विकास का संक्षिप्त इतिहास लिखिए।	[10]
		OR	
		साहित्य और आलोचना के अंत: संबंध को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।	[10]
3.		हिन्दी आलोचना के विकास में भारतेन्दु युग के योगदान को रेखांकित कीजिए।	[10]
		OR	
		"समाजशास्त्रीय आलोचना साहित्य के सामाजिक पक्ष को अधिक महत्त्व देती हैं।" इस कथन के संदर्भ में समाजशास्त्रीय आलोचना पद्धति के महत्व की विवेचना कीजिए।	[10]
4.		ऐतिहासिक आलोचना-पद्धति क्या है? सारगर्भित विवेचना कीजिए।	[10]
		OR	
		"कबीर मस्तमौला थे, जो कुछ कहते थे, साफ-साफ कहते थे।" इस कथन के आधार पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा प्रतिपादित कबीर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का मूल्यांकन कीजिए।	[10]
5.		"साहित्य मूलतः आत्माभिव्यक्ति है।" इस कथन के आलोक में डॉ. नगेन्द्र की आलोचना-दृष्टि का विश्लेषण कीजिए।	[10]
		OR	
		"नंददुलारे वाजपेयी की आलोचना दृष्टि भारतीय परम्परा और संस्कृति पर केंद्रित है।" इस कथन के आधार पर नंददुलारे वाजपेयी की समीक्षा दृष्टि की विवेचना कीजिए।	[10]

6.		दलित आलोचना की मूल अवधारणा को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।	[10]
		OR	
		स्त्रीवादी आलोचना की मूल अवधारणा को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।	[10]
7.		विजयदेवनारायण साही के आलोचनात्मक योगदान का वर्णन कीजिए।	[10]
		OR	
		रामचंद्र शुक्ल का हिंदी आलोचना में योगदान बताइए।	[10]

राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय
दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र (CDOE)
हिन्दी विभाग

End Semester Examination, Session 2025 - 2026

Programme : M. A. (HINDI)
Course Code : **6.0 ODLMAH20**
Course Title : **अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार**
Course Credit : **04**

Semester : I
Maximum Marks : 70
Time Allowed : 3 Hrs
Total Printes Pages : 1 Page

सूचना : सभी प्रश्न अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न में आंतरिक विकल्प है। प्रत्येक प्रश्न को 10 अंक है।

प्र. 1. अनुवाद की अवधारणा एवं स्वरूप विस्तार से स्पष्ट कीजिए ? 10

अथवा

अनुवाद के मुख्य प्रकारों को विस्तार से विश्लेषित कीजिए ? 10

प्र. 2. अनुवाद की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हुए भारत जैसे बहुभाषी देश में उसके महत्व को इंगित कीजिए ? 10

अथवा

आनुवाद में भाषिक विश्लेषण एवं अंतरण और पुनर्गठन की प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए ? 10

प्र. 3. पुनरीक्षण : स्वरूप एवं प्रक्रिया सिद्धांत को विस्तार से स्पष्ट कीजिए ? 10

अथवा

अनुवाद सिद्धांत 'वाक्य रचना के प्रश्न' को विस्तार से स्पष्ट कीजिए ? 10

प्र. 4. अनुवाद की समस्याओं को स्पष्ट करते हुए एक सफल अनुवादक के गुणों अधोरेखित कीजिए ? 10

अथवा

अनुवाद के सिद्धांतों को स्पष्ट करते हुए समतुल्यता की अवधारणा पर विस्तार से प्रकाश डालिए ? 10

प्र. 5. अनुवाद के औजार को स्पष्ट करते हुए अनुवाद में शब्दकोश की भूमिका को स्पष्ट कीजिए ? 10

अथवा

पारिभाषिक शब्दावली की समस्याओं को स्पष्ट करते हुए मशीनी अनुवाद की अवधारणा स्पष्ट कीजिए ? 10

प्र. 6. साहित्यिक अनुवाद से तात्पर्य एवं उसके स्वरूप को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ? 10

अथवा

साहित्येत्तर अनुवाद की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उसके स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डालिए ? 10

प्र. 7. निम्नलिखित शब्दों का अंग्रेजी से हिंदी में सटीक अनुवाद कीजिए ? 10

1. Academic Council, 2. Notification, 3. Dissertation, 4. Sub Editor, 5. Circular
6. Pay Scale, 7. Sacntion, 8. Organization, 9. Curriculum, 10. Recruitment Officer

अथवा

निम्नलिखित शब्दों का हिंदी से अंग्रेजी में सटीक अनुवाद कीजिए ? 10

1. प्रादेशक निदेशक, 2. अनुमोदन करना, 3. पर्यटन महानिदेशक, 4. समिति कक्ष, 5. केन्द्रीय सचिवालय
6. सहायक अधिकारी, 7. ज्ञापन, 8. स्थायी नियुक्ति, 9. मूल्यांकन, 10. शोध छात्र

राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र

सत्रांत परीक्षा-मई -जून 2026 (प्रथम सत्रांश)

पाठ्यक्रम : **स्नातकोत्तर हिंदी**		सत्रांश	**: 1**
कोर्स कोड : **(6.0ODLMAH23)**		अधिकतम अंक	**: 70**
प्रश्नपत्र शीर्षक : **विशेष अध्ययन : मीरा**		समय सीमा	: 3 **घंटा**
कोर्स क्रेडिट : **04**		कुल पृष्ठ	**: 03**

सामान्य निर्देश :- (1) सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं।

(2) प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है |

Q.No.			Marks
1.		मीराबाई के जीवन वृत्त पर प्रकाश डालते हुए उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विस्तार से वर्णन कीजिये ?	[10]
		अथवा	
		भक्ति आन्दोलन में मीराबाई का क्या योगदान है? उदाहरण सहित व्याख्या कीजिये ?	[10]
2.		भक्ति आंदोलन के उदय के मुख्य सामाजिक और धार्मिक कारणों की विस्तृत विवेचना कीजिए। इस आंदोलन ने तत्कालीन समाज को किस प्रकार प्रभावित किया?	[10]
		अथवा	
		मीरा के काव्य की तुलना अन्य कृष्णभक्त कवियों से में करते हुए उनके काव्य में निहित 'मधुर भाव' (माधुर्य भाव) की भक्ति का सविस्तार विश्लेषण कीजिए ?	[10]
3.		निम्न पद की संप्रसंग व्याख्या कीजिए:-	[10]

		"बसो मेरे नैनन में नंदलाल। मोहनी मूरत, साँवरी सूरत, नैना बने बिसाल। अधर सुधारस मुरली राजत, उर बैजंती माल॥ छुद्रघंटिका कटितट सोभित, नूपुर सबद रसाल। मीरां प्रभु संतन सुखदाई भगत बछल गोपाल ॥"	
		अथवा	
		"माई री! मैं तो लियो गोविंदो मोल। कोई कहै छानै, कोई कहै छुपकै, लियो री बजंता ढोल। कोई कहै मुहंघो, कोई कहै सुहंगो, लियो री तराजू तोल। कोई कहै कारो, कोई कहै गोरो, लियो री अमोलिक मोल। या ही कूं सब जाणत है, लियो री आँखी खोल। मीरा कूं प्रभु दरसण दीज्यो, पूरब जनम को कोल॥ "	[10]
4.		"मीराबाई की भक्ति भावना में सगुण और निर्गुण तत्वों का जो अंतर्संबंध दिखाई देता है, उसका विस्तृत विवेचन कीजिए ?	[10]
		अथवा	
		"मीरा के काव्य में विरह की व्याकुलता और मिलन का उल्लास दोनों ही पराकाष्ठा पर हैं।" इस कथन के आधार पर मीरा की विरह-वेदना को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए?	[10]
5.		निम्न पद की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए:- "मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई। जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई। तात मात भ्रात बंधु आपनो न कोई॥ छाँड़ि दी कुल की कानि कहा करिहै कोई। संतन ढिंग बैठि-बैठि लोक लाज खोई। चुनरी के किये टूक ओढ़ लीन्ही लोई। मोती मूँगे उतार बनमाला पोई॥ अँसुवन जल सींचि सींचि प्रेम बेलि बोई।अब तो बेल फैल गई आणँद फल होई॥ दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से बिलोई।माखन जब काढ़ि लियो छाछा पिये कोई॥ भगत देख राजी हुई जगत देखि रोई। दासी "मीरा" लाल गिरिधर तारो अब मोही॥"	[10]
		अथवा	
		एक स्त्री के रूप में मीराबाई का जीवन संघर्ष तत्कालीन सामंती समाज में उनके प्रतिरोध की कहानी है। तर्कसंगत उत्तर दीजिए?	[10]

6.		मीराबाई के जीवन पर तत्कालीन भक्ति आंदोलन और उनके गुरु (संत रैदास) के प्रभावों का सविस्तार वर्णन कीजिए?	[10]
		अथवा	
		"आधुनिक युग में स्त्री-विमर्श और सामाजिक स्वतंत्रता के दृष्टिकोण से मीराबाई के काव्य की प्रासंगिकता सिद्ध कीजिए?	[10]
7.		मीराबाई के पदों की भाषाई विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए। उनकी भाषा में राजस्थानी, ब्रज और गुजराती के मिश्रण का क्या महत्व है?	[10]
		अथवा	
		मीराबाई के काव्य में प्रयुक्त प्रमुख बिंबों, प्रतीकों और अलंकारों का सोदाहरण विवेचन कीजिए?	[10]

Central University of Rajasthan

Center for Distance and Online Education (CDOE)

Dear Learner,

Greetings from the CDOE!

As you are aware, every student enrolled in the ODL Programme is required to write and submit assignments for each course. These assignments form an important component of the continuous assessment and carry **30% weightage** of the overall grade for each course.

Please carefully note the following instructions:

General Instructions

1. Please remember to attach the designated cover page on every assignment you submit. The format of cover page is attached for your reference.
2. All sections of the assignment are compulsory in nature. All questions are to be attempted, except for those where options are provided.
3. Please write the answer mentioning the correct corresponding question number given in the assignment.
4. Please write on continuous pages and number each page.
5. All assignments should be handwritten. Typed or printed assignment will not be accepted.
6. it is strongly recommended to keep a copy (photocopy or scanned) of the assignment sent by you for your record.
7. **The last date for submitting assignments is 10.06.2026.** Submission of assignments is required to appear in the End Semester Examination.
8. Assignments can be deposited at CDOE, Curaj or sent through post to **Director, Centre for Distance and Online Education (CDOE), Room 102, Administration Building, Central University of Rajasthan, Bandarsindari, District: Ajmer – 305817, Rajasthan**.

Director

Centre for Distance and Online Education (ODL & OP)

राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Rajasthan

Assignment

Open and Distance Learning Programme

Learner's Name	: ....
Enrollment Number	: ....
Academic year and Session	: ....
Programme Name and Code	: ....
Course Code	: ....
Course Title	: ....
	....

Learner's Signature

Centre for Distance and Online Education (CDOE)

Room 102, Administration Building, Central University of Rajasthan

N.H. 8, Bandarsindari, District: Ajmer – 305817, Rajasthan

Website: www.curaj.ac.in | Email: cdoe@curaj.ac.in | Phone : 01463 257 556

राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

सत्रीय कार्य

कार्यक्रम का नाम : एम. ए. (हिंदी) **प्रथम छमाही** **कार्यक्रम कोड : ODLMAH**

निर्देश :

1. एम.ए. (हिंदी) कार्यक्रम में शिक्षार्थी के सतत मूल्यांकन के लिए पाठ्यक्रम की प्रत्येक पाठ्यचर्या (कोर्स) में दो सत्रीय कार्य की योजना की गयी है।
2. शिक्षार्थी दोनों सत्रीय कार्य पूर्ण कर नियत अवधि में जमा करवाने पर ही संबंधित पाठ्यचर्या (कोर्स) की सत्रांत परीक्षा में उपस्थित हो सकता है।
3. प्रत्येक सत्रीय कार्य पंद्रह (15) पूर्णांक का है, इस प्रकार से प्रत्येक पाठ्यचर्या (कोर्स) के लिए सत्रीय कार्य के लिए कुल तीस (30) पूर्णांक नियत है। सत्रीय कार्य में प्रत्येक प्रश्न के लिए पाँच (05) अंक निर्धारित है।
4. प्रत्येक सत्रीय कार्य में शिक्षार्थी को तीन प्रश्नों के विश्लेषणात्मक उत्तर लिखने हैं, शिक्षार्थी से अपेक्षा की जाती है कि वह आंतरिक विकल्पों को ध्यान में रखते हुए तीनों प्रश्नों को हल करने का प्रयास करेगा।
5. सत्रीय कार्य शिक्षार्थी की स्वयं की हस्तलिपि में होना आवश्यक है, टंकित एवं प्रिंटेड सत्रीय कार्य स्वीकार नहीं किए जाएँगे।
6. शिक्षार्थी नियत अवधि में सत्रीय कार्य पूर्ण कर निम्नलिखित पते पर डाक द्वारा भेजें अथवा व्यक्तिशः उपस्थित होकर जमा करवाएँ।

सत्रीय कार्य जमा करवाने का पता :

निदेशक, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, कमरा संख्या – 102, प्रशासनिक भवन, राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बांदर सिंदरी, जिला – अजमेर, 305817, राजस्थान

Director, Centre for Distance and Online Education (CDOE), Room - 102, Administration Building, Central University of Rajasthan, Bandarsindari, District - Ajmer – 305817, Rajasthan.

पाठ्यचर्या (कोर्स) का नाम : हिंदी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल) **पाठ्यचर्या (कोर्स) कोड : 6.0 ODLMAH01**

सत्रीय कार्य : 01

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 हिंदी साहित्य के इतिहास के कालविभाजन पर प्रकाश डालते हुए विभिन्न कालों की समय सीमा एवं उनसे संबंधित प्रमुख आलोचकों के मतों की विस्तृत विवेचना कीजिए। 05

प्र. 02 हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा का परिचय देते हुए हिंदी साहित्य के प्रमुख इतिहास ग्रंथों का परिचयात्मक विवरण दीजिए। 05

प्र. 03 आदिकाल के नामकरण की समस्या पर प्रकाश डालते हुए आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए। 05

प्र. 04 भक्ति आंदोलन के उदय की स्थितियों को स्पष्ट करते हुए लोक जागरण में भक्ति काव्य की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए। 05

प्र. 05 निर्गुण भक्ति का आशय स्पष्ट करते हुए प्रमुख संत - सूफी कवियों एवं उनकी रचनाओं का परिचयात्मक विवरण दीजिए। 05

सत्रीय कार्य : 02

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 हिंदी सगुण भक्ति काव्य पर विभिन्न वैष्णव भक्ति संप्रदायों के प्रभाव की विवेचना कीजिए। 05

प्र. 02 हिंदी भक्ति साहित्य में अष्टछाप के महत्व का मूल्यांकन कीजिए। 05

प्र. 03 हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में राम भक्ति से संबंधित साहित्य का विस्तृत विवरण दीजिए। 05

प्र. 04 रीतिकाव्य का आशय स्पष्ट करते हुए रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, एवं रीतिमुक्त काव्यधाराओं पर प्रकाश डालिए। 05

प्र. 05 ‘लक्षण ग्रंथ’ का तात्पर्य बताते हुए रीतिकाल में ‘लक्षण ग्रंथ’ निर्माण की परंपरा का परिचय दीजिए। 05

पाठ्यचर्या (कोर्स) का नाम : हिंदी भाषा का स्वरूप एवं इतिहास **पाठ्यचर्या (कोर्स) कोड : 6.0 ODLMAH02**

सत्रीय कार्य : 01

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 भाषा की परिभाषा देते हुए भाषा की विशेषताओं एवं प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। 05

प्र. 02 भाषा के रूप में हिंदी के उद्भव एवं विकास पर निबन्ध विश्लेषणात्मक लिखिए। 05

प्र. 03 दक्खिनी हिंदी से आप क्या समझते हैं ? विस्तार से बताइए। 05

प्र. 04 भाषा एवं बोली के अंतर्संबंध को स्पष्ट करते हुए हिंदी की बोलियों का परिचय दीजिए। 05

प्र. 05 हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में निरत राष्ट्रीय महत्व की संस्थाओं का विवरण दीजिए। 05

सत्रीय कार्य : 02

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 भाषा के सन्दर्भ में पिजिन एवं क्रेओल का तात्पर्य बताइए। 05

प्र. 02 अर्थविज्ञान का आशय स्पष्ट करते हुए अर्थबोध (संकेतग्रह) के साधन एवं बाधक कारणों की विवेचना कीजिए। 05

प्र. 03 राजभाषा, राष्ट्रभाषा, एवं संपर्क भाषा के मध्य अंतर स्पष्ट कीजिए तथा इन तीनों रूपों में हिंदी की वस्तुस्थिति का मूल्यांकन कीजिए। 05

प्र. 04 भारत के संविधान में राजभाषा एवं हिंदी से संबंधित अनुच्छेदों का उल्लेख कीजिए। 05

प्र. 05 वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की वर्तमान स्थिति विषय पर विश्लेषणात्मक निबन्ध लिखिए। 05

पाठ्यचर्या (कोर्स) का नाम : प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य **पाठ्यचर्या (कोर्स) कोड : 6.0 ODLMAH03**

सत्रीय कार्य : 01

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 "विद्यापति पदावली भक्ति का नहीं श्रृंगार का काव्य है।" इस कथन के पक्ष में तर्क दीजिए। 05

प्र. 02 विद्यापति पदावली के भाषिक सौन्दर्य पर टिप्पणी लिखिए। 05

प्र. 03 आदिकालीन श्रृंगारिक रासो काव्य 'बीसलदेव रासो' का परिचय देते हुए 'बीसलदेव रासो' का कथानक संक्षिप्त में प्रस्तुत कीजिए। 05

प्र. 04 'भ्रमरगीत सार' के आलोक में सूरदास की दार्शनिक चेतना का मूल्यांकन कीजिए। 05

प्र. 05 साहित्य में ऋतु वर्णन की बारहमासा पद्धति को 'नागमती वियोग खंड' के उदाहरण से स्पष्ट कीजिए। 05

सत्रीय कार्य : 02

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 विनय-पत्रिका की भाषिक विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए। 05

प्र. 02 "भक्ति-रस का पूर्ण परिपाक जैसा विनय-पत्रिका में देखा जाता है, वैसा अन्यत्र नहीं।" आचार्य रामचंद्र शुक्ल के इस कथन का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। 05

प्र. 03 मीरां के पदों में चित्रित कृष्ण के स्वरूप की विवेचना करिए। 05

प्र. 04 बिहारी की समास-शक्ति से आप क्या समझते हैं ? विस्तृत विवेचना कीजिए। 05

प्र. 05 "घनानंद का विरह 'मौन मधि पुकार' है।" इस कथन की व्याख्या कीजिए। 05

पाठ्यचर्या (कोर्स) का नाम : हिंदी आलोचना **पाठ्यचर्या (कोर्स) कोड : 6.0 ODLMAH04**

सत्रीय कार्य : 01

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 'हिंदी आलोचना के उद्भव एवं विकास' पर विश्लेषणात्मक निबन्ध लिखिए। 05

प्र. 02 भारतेंदुयुगीन प्रमुख आलोचकों एवं आलोचना कृतियों का परिचयात्मक विवरण दीजिए। 05

प्र. 03 द्विवेदी युग में हिंदी आलोचना के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए। 05

प्र. 04 'आलोचना' शब्द के विभिन्न पर्याय देते हुए साहित्यिक विधा के रूप में आलोचना के स्वरूप का विश्लेषण कीजिए। 05

प्र. 05 हिंदी आलोचना में प्रयुक्त प्रमुख आलोचना पद्धतियों पर प्रकाश डालिए। 05

सत्रीय कार्य : 02

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 आचार्य रामचंद्र शुक्ल के आलोचनात्मक अवदान पर विस्तृत टिप्पणी लिखिए। 05

प्र. 02 हिंदी आलोचना में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए। 05

प्र. 03 समकालीन हिंदी आलोचना में व्यवहृत समीक्षा पद्धतियों पर प्रकाश डालिए। 05

प्र. 04 रामविलास शर्मा की आलोचनात्मक कृतियों का परिचयात्मक विवरण दीजिए। 05

प्र. 05 छायावाद की आलोचना के सन्दर्भ में आलोचक नंददुलारे वाजपेयी के आलोचना कर्म का मूल्यांकन कीजिए। 05

पाठ्यचर्या (कोर्स) का नाम : अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार **पाठ्यचर्या (कोर्स) कोड : 6.0 ODLMAH20**

सत्रीय कार्य : 01

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 अनुवाद से आप क्या समझते हैं ? वर्तमान समय में अनुवाद की उपयोगिता का मूल्यांकन कीजिए। 05

प्र. 02 'शब्दानुवाद' का आशय स्पष्ट कीजिए तथा शब्दानुवाद के गुण – दोषों की विवेचना कीजिए। 05

प्र. 03 अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकारों पर टिप्पणी लिखिए। 05

प्र. 04 साहित्यिक अनुवाद में आने वाली समस्याओं पर विचार कीजिए। 05

प्र. 05 अनुवाद की प्रक्रिया बताते हुए स्पष्ट कीजिए कि वाक्य रचना अनुवाद को किस प्रकार प्रभावित करती है। 05

सत्रीय कार्य : 02

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 मशीनी अनुवाद को समझाते हुए आधुनिक प्रौद्योगिकी के युग में मशीनी अनुवाद की भूमिका स्पष्ट कीजिए। 05

प्र. 02 सफल अनुवाद के लिए पुनरीक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए। 05

प्र. 03 'अनुवादक में अपेक्षित अपरिहार्य गुण' विषय पर टिप्पणी लिखिए। 05

प्र. 04 पारिभाषिक शब्दावली का अनुवाद में योगदान स्पष्ट करते हुए पारिभाषिक शब्दावली के अभाव का अनुवाद पर प्रभाव विश्लेषित कीजिए। 05

प्र. 05 अनुवाद के उपकरण क्या हैं ? विस्तार से बताइए। 05

पाठ्यचर्या (कोर्स) का नाम : विशेष अध्ययन : मीरां **पाठ्यचर्या (कोर्स) कोड : 6.0 ODLMAH23**

सत्रीय कार्य : 01

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 मीरां के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं के प्रकाश में उनका जीवन-वृत्त प्रस्तुत कीजिए। 05

प्र. 02 मध्यकालीन कृष्ण भक्ति परंपरा में मीरां का स्थान निर्धारित कीजिए। 05

प्र. 03 'मीरां वृहत् पदावली' के आधार पर मीरां की काव्यभाषा की विशेषताएँ उजागर कीजिए। 05

प्र. 04 'मीरां वृहत् पदावली' में मीरां के पदों का प्रतिपाद्य सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 05

प्र. 05 'मीरां वृहत् पदावली' के आधार पर कवयित्री मीरां की भक्ति के शास्त्रीय स्वरूप की विवेचना कीजिए। 05

सत्रीय कार्य : 02

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 मीरां की कविता में स्त्री अस्मिता के बिन्दुओं को रेखांकित कीजिए। 05

प्र. 02 "प्रतिरोध मीरां की कविता की मुख्य वस्तु है।" इस कथन के पक्ष में तर्क दीजिए। 05

प्र. 03 "मीरां ने केवल मधुर रस बहाया है। मधुर कहा है, उसके पास माधुर्य के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं।" इस कथन के आलोक में मीरां की भक्ति के स्वरूप का मूल्यांकन कीजिए। 05

प्र. 04 संप्रदाय-निरपेक्ष कवयित्री के रूप में मीरां की कृष्णभक्ति का वैशिष्ट्य विश्लेषित कीजिए। 05

प्र. 05 'मीरां की कविता की वर्तमान प्रासंगिकता' विषय पर निबन्ध लिखिए। 05